आत्मा राम सनातन धर्म कॉलेज

(दिल्लीविश्वविद्यालय)

नैक द्वारा 'ए' रैंक प्रदत्त

एन. आइ. आर. एफ. अखिलभारतीय 7वीं रैंक

प्रपत्र लेखन हेतु आमंत्रण

आतंरिक गुणवत्ता आश्वाशन प्रकोष्ठ

भारत की स्वतंत्रता के 75 वर्ष: आजादी का अमृत महोत्सव

के अवसर पर

इतिहास और हिंदी विभागों तथा अंबेडकर और गांधी स्टडी सर्कल

के सहयोग से प्रस्तुत करता है

दो दिवसीय

अन्तःआनुशासनिक राष्ट्रीय संगोष्ठी

विषय

भारत की परिकल्पना: इतिहास, राजनीति और साहित्य

दिनांक: 23-24 फरवरी 2023

स्थान: सेमिनार हॉल 1 और 2, ए.आर.एस.डी.कॉलेज

अवधारणा पत्र

उत्तरं यत्स मुद्रस्य हिमाद्रेश्चैव दक्षिणम्।

वर्षं तद् भारतं नाम भारती यत्र सन्ततिः ।।

समुद्र के उत्तर में और हिमालय के दक्षिण में जो भूमि स्थित है, उसे भारत भूमि कहते हैं और इस पवित्र भारत भूमि पर निवास करने वाले वासियों को भारतीय कहा जाता है।भारतवर्ष के रूप में भारत की यह भौगोलिक अवधारणा विष्णु पुराण में उल्लिखित है। विष्णु पुराण का रचनाकाल मौर्यवंश(374-190 ई.पू.) का समयकाल माना जाता हैजिसमे मौर्यवंश का अविकल उल्लेख भी मिलता है।इसके साथ ही विस्तार से विभिन्न पर्वतों,प्रदेशों एवं सांस्कृतिक सौन्दर्य के पहलुओं पर प्रकाश डाला गया है।विभिन्न युगों में भारतवर्ष को अन्य विभिन्न नाम भी दिए गए हैं ।नाम की यह अनेकरूपता भारत संबंधी भिन्न धारणा का भी प्रतिनिधित्व करते होंगे।इसी अर्थ में आत्मा राम सनातन धर्म महाविद्यालय विभिन्न युगों(आदिकाल से आज नतक) के परिप्रेक्ष्य में , आज़ादी के पचहत्तरवें वर्ष और अमृत महोत्सव के अवसर पर, 'भारत की अवधारणा' पर विचार –विमर्श हेतु सेमिनार का आयोजन करने जा रहा है।

अगर युगों के परिप्रेक्ष्य में विचार किया जाए तो पहली शहरी क्रांति भारतीय उपमहाद्वीप में तीसरी सहस्राब्दी ईसा पूर्व की मानी जा सकती है जब सिंधुघाटी सभ्यता अस्तित्व में आई थी। इसका फैलाव इसकी भव्यता की गवाही देता है। दुर्भाग्य से हम उस समय की भाषा को नहीं समझ पाते, इसी कारण उस समय के कुछ पहलू अनसुलझे रह जाते हैं। लेकिन मेसोपोटामिया सभ्यता से जुड़े साक्ष्यों ने सिंधु सभ्यता को ***मेलुहा*** के रूप में संदर्भित किया है, जो एक प्रकार की एकीकृत पहचान का प्रतिनिधित्व करता है।[1]सिंधु घाटी सभ्यता के पतन के बाद विभिन्न प्रकार की क्षेत्रीय संस्कृतियों का उदय हुआ, जिन्हें हम वैदिक काल के नाम से जानते हैं। ***विश*** (लोगों) पर ***राजन*** (शासक) का शासन था और इस अवधि में आर्यों और दस्युओं के बीच एक स्पष्ट विभाजन देखा गया था। हम ***ऋग्वेद*** में वर्णित ***सप्तसिंधु*** शब्द से प्रारंभिक वैदिककाल के भौगोलिक विस्तार का अंदाजा लगा सकते हैं।[2]

छठी शताब्दी ईसा पूर्व का समय कई मायनों में महत्वपूर्ण था। लोहे के आगमन ने मानव जीवन में एक महानपरिवर्तन लाया जिसकी परिणति हम सोलह महाजनपदों के उदय में देख सकते हैं।[3] महाजनपदों को बाद में

---

[1]Shereen Ratnager, "The Earliest Notion of India: Meluhha in Mesopotamian Records" edited by Irfan Habib, *India Studies in the History of an Idea*, Delhi, 2005, pp.1-18.

[2]For *Rgveda* translation, Please see, T. H. Ralph Griffith,*The Hymns of Rgveda*, Translated with a Popular comentry, India Reprint, Edited by J.L. Shastri, Delhi, 1973.

[3]HemchandraRaychaudhri, *Political History of Ancient India*, with B.N. Mukherjee, New Delhi, 1997, pp. 85-136.

मौर्य साम्राज्य का विकास होता है, जिसकी सीमाएं अशोक के शासनकाल में ***हिंदुकुश*** पर्वतों से लेकर बंगाल और कर्नाटक तक फैली हुई थीं। अशोक के ***लघु शिलालेख*** पूरे साम्राज्य को ***जम्बूद्वीप*** के रूप में चित्रित करते हैं। पहली शताब्दी ईसापूर्व में, कलिंग के प्रसिद्ध जैन शासक खारवेल, जो **हाथी गुम्फा शिलालेख** (प्राकृत भाषा में लिखे गए) से जुड़े हैं, ने ***भारतवसा*** (भारतवर्ष) को उन क्षेत्रों के रूप में संदर्भित किया है जहां उनके अभियान हुए थे।[4] साम्राज्य के विस्तार ने न केवल भारत की अवधारणा को परिभाषित किया, बल्कि इस के सांस्कृतिक आयाम भी समान रूप से महत्वपूर्ण थे। जाति और धर्म पर आधारित अंतर-क्षेत्रीय पहचान भी उभर रही थी। **'शुद्ध'** और **'प्रदूषित जातियों'** पर आधारित सामाजिक विभाजन की प्रकृति कमोबेश पूरे भारतीय उपमहाद्वीप में एक जैसी रही। बुद्ध की बातचीत से स्पष्ट है कि भारत में जाति आधारित पहचान उभर रही थी।

एक भौगोलिक श्रेणी के रूप में भारत के विचार को विदेशी वृतांतों में और भी बेहतर ढंग से प्रस्तुत किया गया है। इस सन्दर्भ में एक चीनी बौद्ध यात्री **युआनच्वांग-** जो कि भारत की यात्रा कर चुका था- द्वारा भारत का भौगोलिक विवरण उल्लेखनीय है ।उसके अनुसार सातवीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में भारत एक शानदार देश है। इस खंड में ***कपिशा*** (काबुल) के वर्णन के बाद वह भारत पर एक अलग अध्याय लिखता है। इस अध्याय में भारत को ***इंडी*** के रूप में वर्णित किया गया है, जो शायद ***हिंदू*** शब्द से प्रभावित प्रतीत होता है[5]। वास्तव में, ***हिंदू*** शब्द का उपयोग ईरानियों द्वारा सिंधु नदी के उस पार भारतीय उपमहाद्वीप के लोगों के लिए किया गया था, क्योंकि फारसी भाषा में, वर्णमाला '***से***' को' ***हे***' के रूप में उच्चारित किया जाता है। एक अन्य चीनी यात्री **आइ-त्सिंग** जानता था कि यह नाम **ईरानियों** ने दिया है। उसके अनुसार "भारतीय अपने देश को ***आर्यदेश*** भी कहते थे।"[6] **अलबरूनी** की पुस्तक '***किताब-उल-हिंद***' भारत को एक ***मुल्क*** के रूप में प्रस्तुत करती है।

मध्ययुग एक ऐसा समय था जिस समय भारत की अवधारणा कोअधिक मजबूत तरीके से व्यक्त किया गया। क्षेत्रीय भाषाओं के विकास ने देश के एकीकरण में महत्वपूर्ण योगदान दिया। **अमीर खुसरो** एक प्रमुख दरबारी कवि और इतिहासकार, जो सुल्तान **अलाउद्दीन खलजी** सहित दिल्ली के कई सुल्तानों के शासनकाल में रहे, उन्होंने अपने

---

[4]K.G. Krishnan, *Prakrit and Sanskrit Epigraphs 257BC to 320 AD*, Mysore, 1989, pp.151-58.

[5]Thomas Watters, *On Yuan Chwang's Travels in India (AD.629-645)*, Vol.1, Edited by T.W. Rhys Davis and S.W. Bushell, reprint, Delhi, p.131.

[6]I- tsing, *A Record of Buddhist Religion as Practiced in India and the Malay Archipelago (AD 671- 695)*, Edited by J. Takakusu, London, 1896.

लेखन के माध्यम से **हिंदवी** भाषा को परिपक्व बनाने में योगदान दिया। 14वीं शताब्दी के मध्य के एक प्रमुख दरबारी इतिहासकार **जिया-उद-दीन बरनी** ने **अमीर खुसरो** की प्रशंसा करते हुए कहा कि उनके कार्यों की मात्रा और गुणवत्ता दोनों ही बेजोड़ हैं। साहित्य की सभी विधाओं में उन्हें अद्भुत सफलता मिली। ऐसे कवि बहुत कम हुए हैं। अमीर खुसरो कवि होने के साथ-साथ एक महान सूफी भी थे। वह महान चिश्ती संत शेख **निजामुद्दीन औलिया** के मुरीद थे। अमीर खुसरो गायन और वादन दोनों में उस्ताद थे।[7] ***ब्रजभाषा*** या ***हिंदवी*** में लिखी उनकी साहित्यिक रचनाएँ फारसी में उनके किये गए कार्यों की तरह व्यापक थीं। दुर्भाग्य से, उनकी कई ***हिंदवी*** रचनाएँ हमारे लिए अप्राप्य हैं।[8]लेकिन प्रसिद्ध इतिहासकार **मोहम्मदहबीब** ने **खुसरो** के छंदों की उच्च गुणवत्ता की ओर हमारा ध्यान आकर्षित किया है जो हमारे बीच उपलब्ध हैं। खुसरो की हिंदी रचनाएँ उपलब्ध हैं, लेकिन फ़ारसी रचनाओं की तुलना में ये बहुत कम हैं।"[9]

प्रसिद्ध उर्दू विद्वान गोपीचंद नारंग का मत है कि 13वीं और 14वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में **अमीर खुसरो** ने अपनी साहित्यिक रचनाओं के लिए जिस भाषा का प्रयोग किया, उसे **उर्दू** या **हिंदी** नहीं कहा जा सकता, क्योंकि ये आधुनिक भारतीय भाषाएँ हैं और ये खुसरो के समय अस्तित्व नहीं रखती थीं। खुसरो द्वारा कभी-कभी प्रयुक्त भाषा के लिए ***खड़ीबोली***, ***हरियाणवी*** और ***ब्रज*** शब्द का भी प्रयोग किया जाता है। इन सभी नामकरणों की अपनी सीमाएँ हैं, क्योंकि ख़ुसरो और उस समय के अन्य लेखकों ने भाषा के नामकरण पर कोई ध्यान नहीं दिया। पिछले कुछ दशकों में किए गए शोध से पता चला है कि ***शरशौनी अपभ्रंश*** दिल्ली, हरियाणा और पश्चिमीउत्तरप्रदेश में प्रसिद्ध था। अपभ्रंश का कोई व्यवस्थित रूप नहीं था। निश्चित रूप से प्रत्येक अपभ्रंश में विलुप्त प्रादेशिक विशेषताएँ भी अवश्य रही होंगी।[10]

अमीर खुसरो ने अपने जीवन का एक बड़ा हिस्सा **दिल्ली** में बिताया। इसलिए उसकी भाषा वही होनी चाहिए जो उस समय दिल्ली की आम भाषा थी।अमीर खुसरो ने अपने समय की ***हिन्दुस्तानी*** भाषाओं की सूची दी है:

---

[7]Ziauddin Barani, *Tarikh-iFirozshahi*, cited in Mohammad Habib, "Hazrat Amir Khusrau of Delhi" in Irfan Habib (ed.), *Studies in Medieval Indian Polity and Culture*, Delhi: Oxford University Press, 2016, pp.228-29.

[8]Auhadi, *Arafat- al- Arifeen*, Cited in, *Ibid*, p.230

[9]Mohammad Habib, "Hazrat Amir Khusrau of Delhi", edited by Irfan Habib, *Studies in Medieval Indian Polity and Culture*, Oxford University Press, 2016, p. 230.

[10]Gopi Chand Narang, *Amir KhusrauKeHindavi Kavya*, Vani Prakashan, 2002, p.21

"सिदी ओ लाहोरी- ओ कश्मीर ओ गर, धुर समंदरी तिलंगी- ओ- गुजर,

माबारी ओ गोरी. ओ. बंगाल ओ अवध, दिल्ली ओ परमानश अंदर हम हद.

इहम हिंदविस्त जी अय्याम. ए. कुहन, अम्मा बाकरसत बहर गुना सुखन !"[11]

इससे यह स्पष्ट हो जाता है कि ***सिंधी, पंजाबी, कश्मीरी, मराठी, कन्नड़, तेलगु, गुजराती, तमिल, असमिया, बंगाली, अवधी*** और ***देहलवी*** आदिकाल से ही ***हिंदवी*** कहलाते थे। ***हिंदवी*** के अलावा **खुसरो** ने संस्कृत को भारत की शास्त्रीय भाषा बताया है। उन्हें खुद को ***हिंदुस्तानी*** कहने में गर्व महसूस होता था। उनके कई काव्य आख्यानों में ***हिंदुस्तान*** की महिमा का वर्णन किया गया है।अमीर खुसरो की हिंदवी कविता की लोकप्रियता के कारण उसे पीढ़ी-दर-पीढ़ी पढ़ा और गाया गया है और यह देशी साहित्य का एक अभिन्न अंग बन गया। सल्तनतकाल के एक अन्य इतिहासकार, **इसामी** द्वारा हिंदुस्तान देश की प्रशंसा शायद **अमीर खुसरो** से प्रभावित थी। इसामी ने भारत की सुंदरता का वर्णन इस प्रकार किया है: ***"मुल्क- ए- हिंदुस्तान की समृद्धि के बारे में क्या कहना है: स्वर्ग भी इस खूबसूरत बगीचे से ईर्ष्या करता है। इसका पूरा क्षेत्र एक खूबसूरत दुल्हन के चेहरे पर एक तिल की तरह पृथ्वी के चेहरे का आभूषण है।***"[12]

भारत का विचार अकबर के समय में और भी स्पष्ट हो गया। अबुल फजल ने लिखा है: "**काबुल** और **कंधार हिंदुस्तान** में प्रवेश करने और इन दो मार्गों पर कब्जा करने के दो द्वार थे। **अकबर** ने **हिंदुस्तान** को विदेशियों से सुरक्षित बनाया।" **अबुल फजल** के बौद्धिक प्रयासों में ***शाही संप्रभुता*** के सिद्धांत की अवधारणा अपने चरम पर पहुंच गई। अकबर की संप्रभुता को वैध बनाने के लिए अबुल फजल द्वारा प्रस्तुत विभिन्न तर्क औ रबादशाह के लिए उनके द्वारा दिखावटी उपाधियों का उपयोग इस प्रक्रिया का एक हिस्साहै। इस प्रकार, उदाहरण के लिए, अकबर को ***जिल- ए- इलाही*** (ईश्वर की छाया), ***साहिब- ए- ज़माना*** (संपूर्ण ब्रह्मांड का राजा), और ***इन्सान- ए- कामिल*** (एक पूर्ण इंसान), आदि कहा जाता था। भारतीय संस्कृति और परंपराओं में मुगल शासन की जड़ें कई मायनों में अनूठी हैं। ***हिंदुस्तान- ए- जन्नत निशान*** (भारत जैसा स्वर्ग) एक आधिकारिक आम जगह बन गया। इतिहासकार

---

[11]Amir Khusrau, *Nuh Siphar*, cited in Ibid, p.23.

[12]Isami, *Futuh- us- Salatin*, Cited in, M. Athar Ali, "Samagam aur Prasfutan" Edited by Irfan Habib, *Madhyakaleen Bharat*, Rajkamal Prakashan.

ताराचंद सही बतातेहैं कि दिल्ली सल्तनत और मुगलसाम्राज्य ने हिंदुस्तान को राजनीतिक एकता प्रदान की। अकबर ने हिन्दुस्तान को विदेशियों से सुरक्षित बनाया।[13]

18वीं शताब्दी की एक बड़ी पहचान है अखिल भारतीय स्तर की केंद्रीकृत राजनीतिक शक्ति का अभाव है। 19वीं शताब्दी के मध्य तक, ब्रिटिश शासन के खिलाफ एक माहौल विकसित होना शुरू हो गया, जिसकी परिणति 1857 के विद्रोह में हुई। इस विद्रोह ने कम से कम यह दिखाया कि भारत की धारणा केवल शासक वर्ग तक ही सीमित नहीं थी, बल्कि सैनिकों और आम जनता के बीच समान रूप से गहरी भावना मौजूद थी। भारत पर औपनिवेशिक ऐतिहासिक लेखन की प्रतिक्रिया के रूप में, **दादा भाई नौरोजी, बंकिम चंद्र चटर्जी, आर. सी. दत्त, सुरेंद्रनाथ बनर्जी, लाजपत राय, वी. डी. सावरकर, महात्मा गांधी,** आदि के प्रतिनिधित्व वाले राष्ट्रवादी लेखन उभरे। **बंकिमचंद्र** ने 1872 में, समाचारपत्र ***बंगदर्शन*** का पहला अंक प्रकाशित किया।। **बंकिम चन्द्र** के द्वारा लिखा गया ***वंदेमातरम*** गीत, एक राष्ट्र के रूप में भारत की धारणा का विशेष उदाहरण था**।** हालाँकि, जैसा कि राजाराम मोहन राय द्वारा लिखे गए एक पत्र से स्पष्ट है, भारत में जाति व्यवस्था की उपस्थिति ने निचली जातियों को देशभक्ति की भावना से वंचित कर दिया। **महात्मा गांधी** ने अपने ***हिंदस्वराज*** में महिलाओं और दलितों की स्थिति में सुधार की वकालत की। **एक राष्ट्र के रूप में** भारत का विचार भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के दौरान विशेष रूप से गांधीवादी युग में दृढ़ता से विकसित हुआ, जिसके कारण भारत को स्वतंत्रता मिली।[14]

इस संगोष्ठी का उद्देश्य इन सवालों के जवाब तलाशना है: युगों से भारतीय राष्ट्र के निर्माण में राजनीति ने किस तरह का योगदान दिया? क्या ब्रिटिश-पूर्व भारत में भारत की पहचान शासकों की पहचान से पूरी तरह जुड़ी हुई थी? एक राष्ट्र के रूप में भारत के गठन में बाहरी कारकों की क्या भूमिका थी? इस निर्माण की प्रक्रिया में विविध दर्शनों क्या योगदान था? ये दर्शन कहाँ तक राजनीतिक, आर्थिक और सामाजिक-सांस्कृतिक आयामों से संबंधित हैं? विभिन्न कालखंडों के साहित्य में अभिव्यक्त भारत के विचार में परिवर्तनों का अन्वेषण कैसे किया जाता है? प्रारंभिक साहित्यिक परंपराओं ने भारत के विचार को विकसित करने में बाद की साहित्यिक संस्कृतियों को किस हद तक

---

[13]Abul Fazl, *Ain- i- Akbari*, Nawal Kishore, Lucknow,1892, p.192.

[14]For several aspects of nation and nationalism in Modern period, please refer, Saurav Kumar Rai, *Debating Modern India*, Manak Publication Pvt Ltd, New Delhi, 2021.

प्रभावित किया? भारतीय राष्ट्र के निर्माण में स्वदेशी साहित्य का क्या प्रभाव पड़ा? राष्ट्र निर्माण के लिए भाषाओं का एकीकरण कितना महत्वपूर्ण था? कई अन्य परस्पर संबंधित विषय संगोष्ठी के विचार-विमर्श के विषय बन सकते हैं।

प्रस्तावित संगोष्ठी में 'युगों के परिप्रेक्ष्य में भारत की अवधारणा' विषय पर मानविकी, सामाजिक विज्ञान और अन्य अनुशासनों से राजनीति, दर्शन और साहित्य के संदर्भ में प्रपत्र प्राप्त होने की उम्मीद है। प्रपत्र के विषय निम्नलिखित संभावित उप-विषयों के अनुकूल हो सकते हैं, लेकिन यहीं तक सीमित नहीं हैं:

1. भारत की धारणा: ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य

2. भारत की धारणा: साहित्यिक परिप्रेक्ष्य

3. भारत की धारणा: राजनीतिक परिप्रेक्ष्य

4. भारत की धारणा: दार्शनिक परिप्रेक्ष्य

5. भारत की धारणा और भारतीय समाज

6. भारत का राष्ट्रीय आंदोलन और भारत की धारणा

7. जातिगत पहचान और भारत की धारणा

8. साम्राज्यवादी शासन के दौरान भारत की धारणा

9. भारत की धारणा: एक राष्ट्रवादी नजरिया

10. स्वतंत्र भारत में भारत की धारणा

11. आधुनिकतावाद और भारतीय पहचान

12. वैश्वीकरण और भारतीय अस्मिता

13. भारत और भारतीय प्रवासियों की धारणा

14. भारत की धारणा: सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य

15. लैंगिक परिप्रेक्ष्य में भारतीयता की धारणा

16. क्षेत्रीयता की पहचान और भारत की धारणा

महत्वपूर्ण तिथियाँ:

1-शोध सार प्रस्तुत करने की अंतिम तिथि: **20 जनवरी 2023**

2-शोध सार के चयन की पुष्टि: **25 जनवरी 2023**

3-पूर्ण प्रपत्र जमा करने की अंतिम तिथि: **15 फरवरी 2023**

शोध सार हेतु दिशा निर्देश:

1. शोध सार **300 शब्दों** से अधिक नहीं होना चाहिए।
2. शोध पत्र हिंदी और अंग्रेजी दोनों भाषाओं में भेज सकते है।
3. शोध पत्र **५००० से ६००० शब्दों** से ज्यादा नहीं होना चाहिए।
4. आयोजन समिति के द्वारा शोधसार की स्वीकृति एवं प्रतिपुष्टि के बाद ही पूर्ण शोधपत्र भेजें।
5. कृपया अपना शोध सार और शोध पत्र इस ईमेल पर भेजें:

   arsdnationalseminar2022@gmail.com

पंजीकरण शुल्क: **प्राध्यापक 700/-,**
शोधार्थी 500/-,
विद्यार्थी 300/-

संरक्षक
प्रोफेसर ज्ञानतोष कुमार झा
प्राचार्य

संयोजक, आई. क्यू. ए.सी.
डॉ. विनीता तुली

संयोजक
दीपांकर
9990179780

आयोजन समिति

श्री अजीत कुमार, 9868888693, **डॉ. विकास कुमार**, 9971961377, **डॉ. अरविंद कुमार मिश्र,** 9311558473, **डॉ. श्री धरम**, 9868325811, **डॉ. विजय नारायण मणि,** 9868601631